हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)
(बसंत)(पाठ 4)(भवानी प्रसाद मिश्र – कठपुतली)
(कक्षा 7)

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1:
कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?
उत्तर 1:
कठपुतली को अपने बंधनों को देखकर गुस्सा आया

प्रश्न 2:
कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वह क्यों नहीं खड़ी होती?
उत्तर 2:
कठपुतली को अपने पावों पर खड़ी होने की इच्छा है लेकिन वह धागों के सहारे से खड़ी है । वह हमेशा से ही सहारा लेकर खड़ी होती आई हैं इसलिए वह खड़ी नहीं होती ।

प्रश्न 3:
पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी?
उत्तर 3:
पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को इसलिए अच्छी लगी क्योंकि उसने अपने भाग्य से हटकर अपने पैरों पर खड़ी होने की इच्छा व्यक्त की

प्रश्न 4:
पहली कठपुतली ने स्वयं कहा कि 'ये धागे / क्यों हैं मेरे पीछे–आगे?/ इन्हें तोड़ दो / मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो।'तो फिर वह चिंतित क्यों हुई –'ये कैसी इच्छा / मेरे मन में जगी ?' नीचे दिए वाक्यों की सहायता से अपने विचार व्यक्त कीजिए–

- उसे दूसरी कठपुतलियों की जिम्मेदारी महसूस होने लगी।
- उसे शीघ्र स्वतंत्र होने की चिंता होने लगी।
- वह स्वतंत्रता की इच्छा को साकार करने और स्वतंत्रता को हमेशा बनाए रखने के उपाय सोचने लगी।
- वह डर गई, क्योंकि उसकी उम्र कम थी।

उत्तर 4:

- उसे लगने लगा कि यदि में ऐसा करूंगी तो दूसर कठपुतलियों का क्या होगा वे भी मेरी तरह विद्रोही बन जाएंगी ।
- वह जल्दी से जल्दी स्वतंत्र होना चाहती थी जिससे वह दुसरों को प्रेरणा दे सके ।
- वह मन में विचार करने लगी कि किस प्रकार इन धागों के बंधनों से मुक्ति पाई जाए स्वतंत्र हुआ जाए और इस रवतंत्रता को किस प्रकार बनाए रखा जाए ।
- वह इतनी छोटी उम्र में इतना बड़ा कदम नहीं उठाना चाहती थी।

हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)
(बसंत)(पाठ 4)(भवानी प्रसाद मिश्र – कठपुतली)
(कक्षा 7)

कविता से आगे

1:

'बहुत दिन हुए / हमें अपने मन के छंद छुए। इस पंक्ति का अर्थ और क्या हो सकता है ? अगले पृष्ठ पर दिए हुए वाक्यों की सहायता से सोचिए और अर्थ लिखिए–

क:

बहुत दिन हो गए, मन में कोई उमंग नहीं आई।

क:

बहुत दिनों से कोई मन में उमंग उठाने वाला और मन को हिला देने कार्य नहीं किया

ख:

बहुत दिन हो गए, मन के भीतर कविता–सी कोई बात नहीं उठी, जिसमें छंद हो, लय हो।

ख:

कठपुतली की तरह नाचते–नाचते मन में नए भाव आने ही बंद हो गए हैं ।

ग:

बहुत दिन हो गए, गाने–गुनगुनाने का मन नहीं हुआ।

ग:

बहुत दिनों से मन उदास है वह आजादी चाहता है और न मिलने के कारण खुशी को भी नहीं महसूस कर पाता है ।

घ:

बहुत दिन हो गए, मन का दुख दूर नहीं हुआ और न मन में खुशी आई।

घ:

मन में एक अलग तरह की बेचैनी है वह स्वतंत्र होकर खुले आसमान में उडना चाहता है । मगर इच्छा पूरी न हो पाने के कारण दुखी है

2:

नीचे दो स्वतंत्रता आंदोलनों के वर्ष दिए गए हैं। इन दोनों आंदोलनों के दो–दो स्वतंत्रता सेनानियों के नाम लिखिए –

क:

सन् 1857 ....

क:

रानी लक्ष्मीबाई , तात्या टोपे

ख:

सन् 1942 ....

ख:

शहीद भगत सिंह , सुभाष चंद्र बोस